वर्ष : ३२, अंक : ६, सितम्बर '९१ रजि० क्र० ६६८६/६०
विक्रमी २०४८ ईसवी सन् १९९१ सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११४
Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

शाश्वत वाणी

शृतस्य सानावधि चक्रमाणाः रिहन्ति मध्वो अमृतस्य वाणीः ॥
ऋ०-१०-१२३-७

विषय-सूची

		पृष्ठ संख्या
उपनिषद् वाक्य		३
सम्पादकीय		४
राजभाषा के रूप में हिन्दी	चन्द्रकान्त त्रिपाठी 'चंद्रेश'	८
धर्मनिरपेक्षता के प्रसंग में	स्व० श्री गुरुदत्त	११
क्रान्ति के महान् नायक—सरदार भगतसिंह		१४
समय बचाने की कला	रेमांड शुएसलर	१७
क्या है सर्वधर्म समभाव	विद्यासागर विद्यालंकार	२१
रोगनिवारक महौषधि—तुलसी	डॉ० श्री उपेन्द्रराय जे० सांडेसरा	२५
'खोजा' मुसलमान क्यों बने ?	वचनेश त्रिपाठी 'साहित्येन्दु'	३१
संस्कृत में शपथ ग्रहण करने वाले सांसद		३३

शाश्वत संस्कृति परिषद का मासिक मुखपत्र

	एक अंक	वार्षिक शुल्क	आजीवन शुल्क
भारत में			२००.००
विदेशों में	१०.००	२००.०	८००.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Ary

श्री गुरुदत्त स्मारक समिति की ओर से

समिति की ओर से दो प्रेरणाप्रद पुस्तिकाएँ निःशुल्क वितरणार्थ प्रकाशित हो चुकी हैं। पुस्तिकाएँ हैं—१. श्रीमद्भगवत्गीता-सार, २. हिन्दू का स्वरूप

प्रत्येक की पाँच-पाँच सहस्र प्रतियाँ प्रकाशित की गई हैं। हमारे कई सहयोगियों ने इन पुस्तिकाओं के अधिक संख्या में वितरण के लिए इनकी सौ-सौ तथा इससे भी अधिक प्रतियों की लागत का भार वहन करने का आश्वासन दिया है। इस विषय में हमारा आयोजन इस प्रकार है—

जो भी बन्धु १००-१०० प्रतियों की लागत (रुपये तीन सौ केवल) हमें भेजेंगे, हम उनकी माँग की प्रतियों पर प्रचारक के रूप में उनका नाम मुद्रित कर वे प्रतियाँ उनको अपने मित्रों, परिचितों तथा अपने क्षेत्र में वितरणार्थ भेज सकेंगे।

इस विषय में जो भी सहयोग देना चाहें वे अपनी माँग के अनुसार धन मनीआर्डर द्वारा भेज सकते हैं अथवा बैंक ड्राफ्ट हमारे वितरक 'भारती साहित्य सदन' (३०/९० कनाट सरकस, नई दिल्ली) के नाम से भेज सकते हैं। धन प्राप्त होने के १५ दिन के भीतर प्रतियाँ उनको भेज दी जाएँगी।

१००-१०० से कम प्रतियाँ मँगवाने पर नाम नहीं छप सकेगा परन्तु प्रचारक के रूप में अपने नाम की रबड़ की मुहर बनवा कर तथा पुस्तिकाओं पर लगाकर वे वितरित कर सकेंगे।

अपने निम्न सहयोगियों के सहयोग के लिए हम उनके आभारी हैं। इनको पुस्तिकाएँ भेजने की व्यवस्था की जा रही है।

१. श्री गोपालशरण विद्यार्थी, नई दिल्ली	प्राप्त राशि	२,२५० रुपये
२. श्री मुरलीधर प्रसून, बंगलौर	,,	५०० रुपये
३. श्री रामकिशोर कासदे, बेतूल	,,	३०० रुपये
४. श्री डॉ० प्रकाश भारती, नई दिल्ली	,,	३०० रुपये
५. श्री डॉ० अनिल तनेजा, ग्वालियर	,,	१०० रुपये
६. श्री पी० के० मारू, राँची	,,	३०० रुपये
७. श्री राधाकृष्ण टण्डन, अमरोहा	,,	३०० रुपये

अन्य सहयोगियों के नाम अगले अंक में दिए जाएँगे।

Dr. Vivek Arya

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शाश्वत वाणी

संस्थापक
स्व० श्री गुरुदत्त
व्यवस्थापकीय कार्यालय
३०/९०, कनॉट सरकस,
नई दिल्ली-१
(फोन : ३४३५५७)

सम्पादक
अशोक कौशिक
सम्पादकीय कार्यालय
७-एफ, कमला नगर,
दिल्ली-७
(फोन : २९१०३३५)

उपनिषद् वाक्य

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥

—यजु० ४०-१६

हे स्वप्रकाशस्वरूप सर्वकल्याणकारी (परमात्मा)! सुख-सम्पदा के लिए हमें ठीक पथ पर ले चलो। समस्त दिव्य शक्तियाँ और सब ओर का ज्ञान रखने वाले विद्वान् हमारा पथ-प्रदर्शन करें। हमें कुटिलता तथा पापाचरण से दूर रखो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

मुझे यह बता कि लुटा कैसे कारवाँ

कुछ वर्ष पूर्व इन्हीं पंक्तियों में हमने राजधानी में 'मिनी बंगला देश' के विषय में सूचना दी थी। एक प्रसिद्ध सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था के वरिष्ठ अधिकारी ने वह पढ़ा तो उनको विश्वास नहीं हुआ। संयोगवश दो-चार दिन बाद उनकी और हमारी एक सभा में भेंट हुई तो उन्होंने अपना अविश्वास हमसे व्यक्त किया। हमने कहा—'हाथ कंगन को आरसी क्या?' आप स्वयं जाकर अपनी आँखों से देख लीजिए। वे गए और देख आए और हमें बता भी दिया कि जो कुछ हमने लिखा था वह अक्षरशः सत्य था। किन्तु बस! बात उनके लिए यों ही आई-गई हो गई। कम-से-कम मैं तो यही मानता हूँ।

वह मिनी बंगला देश आज दिल्ली की राजनीतिक पार्टियों का वोट बैंक बना हुआ है। केन्द्रीय शासन ने वहाँ एक शानदार और जानदार जामा-मस्जिद बनवा दी है। जो दिन में पाँच बार पूर्वी दिल्ली को अजां से गुंजायमान कर देती है। वह स्थान है नई सीमापुरी। अर्थात् सीमापुरी और डी० टी० सी० के शाहदरा डिपो के निकट। यदि राजधानी में ऐसा एक मिनी बंगला देश स्थापित हो सकता है तो क्या आश्चर्य कि देश के अन्य नगरों में इस प्रकार के छोटे-छोटे बंगला देश न बने हों। यह भी सम्भव है कि हमारी ही भाँति किसी अन्य का भी उन पर ध्यान गया हो और उन्होंने भी किसी संगठन के किसी अधिकारी को इसकी सूचना दी हो और उसके बाद भी वे यथास्थान विद्यमान हों।

भारतवासी समय-समय पर और स्थान-स्थान पर यह घोष सुनते आए हैं—'लड़ के लिया है पाकिस्तान, हँस के लेंगे हिन्दुस्थान।' यह घोष पाकिस्तानवासी नहीं अपितु भारतवासी लगाया करते हैं। किसी युग में एक चुटकुला प्रसिद्ध था—'रूस में वर्षा होने पर भारत का कम्युनिस्ट अपने नगर में छाता तानकर चलता है।' यह चुटकुला अब अर्थहीन हो गया है। इसके विपरीत यदि भारत-पाकिस्तान में युद्ध हो रहा हो, भारत-पाकिस्तान की खिलाड़ी टीमों के मध्य कोई मैच हो रहा हो, उसमें यदि भारत की जीत होती है तो इस देश का एक वर्ग मातम मनाता है, यदि पाकिस्तान की जीत हो रही हो तो वही वर्ग प्रसन्नता से नाचता हुआ सड़क पर उतर आता है। सड़क पर तो वह मातम मनाता हुआ भी उतर आता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परिणामस्वरूप दोनों अवस्थाओं में वह तोड़-फोड़ पर उतारू हो जाता है। यह सत्य है और इसे सभी राजनीतिक और सामाजिक संस्थाएँ भलीभाँति जानती हैं किन्तु कोई इसका विरोध नहीं कर सकता। विरोध करते ही उस पर साम्प्रदायिकता का न केवल लांछन लग जाता है, अपितु उसको प्रताड़ित भी किया जाता है। कभी-कभी तो दण्डित भी कर दिया जाता है। ऐसा क्यों ?

देश में जयशंकर गुप्त और राजीव सक्सेना जैसे पत्रकारों की कमी नहीं है जो क्रमशः दैनिक नवभारत टाइम्स और साप्ताहिक हिन्दुस्तान में—बरेली में चुनाव ने दिलों को बाँटा तथा साम्प्रदायिक पुरातत्त्व कब्रिस्तान में मूर्तियों को खोज रहा है। (नभाटा १८, १९-८-९१) एवं राम मन्दिर निर्माण के सम्बन्ध में 'आत्म-परीक्षण की आवश्यकता' (सा० हि०) जैसे शीर्षकों के माध्यम से हिन्दुओं को साम्प्रदायिक सिद्ध करने में भी अपने कर्तव्य की इतिश्री समझते हैं। ये बिके हुए लोग ही आग में घी का काम करते हैं। किन्तु इन्हें दिन के प्रकाश में भी विधर्मियों द्वारा किए गए भ्रष्ट मन्दिर आदि दिखाई नहीं देते। ऐसे दिवान्धों की इस देश में कमी नहीं है। तथाकथित बुद्धिजीवी अथवा बुद्धिशील एवं पत्रकार, विशेषतया हिंदी पत्रकार सर्वाधिक बिका हुआ है। राजीव सक्सेना को चाहिए कि उसके लेख के अगले पृष्ठ पर अल्लामा इकबाल के बेटे की भेंट वार्ता पढ़ लें तो कदाचित् उनकी आँख खुल जाय, जिसमें उसने अपने पिता और स्वयं अपने विचार स्पष्ट किए हैं।

स्थान-स्थान पर राजमार्गों के ही नहीं सामान्य सड़कों के किनारे भी आये दिन एक मजार, एक कब्र बन जाती है। दो दिन बाद वहाँ पर गुरुवार के दिन फूल चढ़े हुए और दीपक जले हुए दिखाई दे जाते हैं। यदि उसके विरोध में कोई कुछ कहता है तो उसको साम्प्रदायिक ही नहीं अपितु अशान्ति का प्रसार करने वाला सिद्ध कर दण्डित किया जाता है। इसके विपरीत यदि कहीं किसी अधिकृत स्थान पर किसी मन्दिर का निर्माण आरम्भ होता है तो सारा सरकारी तन्त्र, नगरपालिका अथवा नगर निगम उसकी छानबीन के लिए सदल-बल वहाँ पहुँचकर उसमें व्यवधान उत्पन्न करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ता। भला क्यों ?

एक ओर से योजनाबद्ध यह सब हो रहा है। मजारों का निर्माण, नई बस्तियों की स्थापना, यहाँ तक कि जहाँ किसी सम्प्रदाय विशेष का कोई व्यक्ति दर्शन के लिए भी दुर्लभ था, आज उस बस्ती अथवा मोहल्ले की गली-गली में उस सम्प्रदाय के लोगों की अनेक दुकानें पाई जाती हैं। एक समय ऐसा भी आएगा जब उन बस्तियों में उनके निवास भी देखने को मिलेंगे। न केवल इतना अपितु हमारे युवक-युवतियों को धन, जन और बल का लालच देकर उन्हें अपने सम्प्रदाय में सम्मिलित करने का योजनाबद्ध षड्यन्त्र चल रहा है। आए दिन समाचार-पत्र में यह पढ़ने को मिलता है—"मैं अमुक-अमुक पवन कुमार ने अपना नाम और पंथबदल कर अमुक नाम रख लिया है।" यह तो किसी उद्देश्य विशेष से समाचार-पत्र में दिया विज्ञापन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होता है, किन्तु उन हजारों अविज्ञापित पन्थ परिवर्तनों की गणना कौन करेगा ?

क्या कारण है कि आज हमारा युवा वर्ग अपना निर्धारित पन्थ त्यागकर अन्य समुदाय में मिलकर शान्ति और सुख की कामना करने लगा है। वह सुख-शान्ति उसे वहाँ मिलते हैं या नहीं, अथवा वहाँ जाकर उसको वही सब-कुछ देखने को मिलता है या नहीं कि जिसके त्रस्त होकर वह उधर गया था, यह दूसरी बात है। क्योंकि उसके परावर्तन का भी तो हमने कोई मार्ग नहीं खोला हुआ है जो एक बार उस रंग में रंग गया उसका फिर उबारना कठिन है। क्योंकि हम इतने रूढ़िवादी हो गए हैं कि उसे वापस ले नहीं सकते। हमें अजीर्ण हो गया है। न उसे वापस लेकर पचा सकते हैं और न उसको पचा सकते हैं जो हमारे पास आना चाहता है। महिला का तो वापस लौटने का प्रश्न ही नहीं, वह पतिता घोषित कर दी जाती है। इस तन्द्रा से कब जागेगा हमारा समाज ?

कौन है इसके लिए दोषी ? मुझे उर्दू कवि की कुछ पंक्तियाँ स्मरण हो रही हैं—

तू इधर उधर की बात न कर, मुझे यह बता कि लुटा कैसे कारवाँ ?
मुझे रहजनों की फिक्र नहीं, तेरी रहबरी का सवाल है।

जी हाँ, इसके लिए हमें किसी अन्य को दोष नहीं देना होगा। हमें आत्म-निरीक्षण करना होगा। और जब तक इसका कोई उपाय खोजकर उसको कार्यान्वित नहीं किया जाता तब तक यह सब होता रहेगा। तब फिर आप कितने ही राम मन्दिर बनवा लें, कितने ही शिव मन्दिरों के लिए संघर्ष कर लें, कृष्ण जन्म-स्थान के लिए कितनों की ही बलि दे दें, उससे कोई लाभ नहीं। जब तक इन देव मन्दिरों के उपासकों की ओर आपका ध्यान नहीं जाएगा, तब तक उन देव मन्दिरों पर अपनी शक्ति और सामर्थ्य का प्रदर्शन व्यर्थ है।

मन्दिर-निर्माण, अधिग्रहीत जन्म-स्थान अथवा मन्दिर भूमि को विधर्मियों से मुक्त करना आपका, हमारा, सबका कर्तव्य है, उसका पालन होना ही चाहिए। किन्तु यह सब किसलिए ? भविष्य में जब उन मन्दिरों में जाने के लिए कोई उपासक ही नहीं बचेगा तो इस सारे कर्तव्यपालन का, संघर्ष का, शक्ति-सामर्थ्य आदि के व्यय का लाभ क्या होगा ? क्या यह मात्र अपव्यय सिद्ध नहीं होगा ? मन्दिरों के साथ-साथ उपासकों और भावी भक्तों की भी तो सुध लीजिए।

धर्मवीर हकीकत, गुरु के चारों लाल, वीर बन्दा वैरागी, गुरु तेगबहादुर आदि-आदि बलिदानियों की परम्परा का क्या यही अन्त होगा ?

अभी अवसर नहीं बीता है। जब नींद खुले तभी सबेरा समझिए और अपने कर्तव्य को पहचान कर उसका पालन करिए। नहीं तो फिर कल को आप ही कहेंगे—

उनकी तुर्बत पै नहीं आज एक भी दीया जिन्होंने जलाए थे चिरागे वतन।
आज महकते हैं मकबरे उनके, जिन्होंने बेचे थे शहीदों के कफन॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिंसा और अहिंसा

—सरदार भगतसिंह

पहले हम हिंसा और अहिंसा के प्रश्न पर ही विचार करें। हमारे विचार से इन शब्दों का प्रयोग ही गलत किया गया है, और ऐसा करना ही दोनों दलों के साथ अन्याय करना है, क्योंकि इन शब्दों से दोनों ही दलों के सिद्धान्तों का स्पष्ट बोध नहीं हो पाता। हिंसा का अर्थ है अन्याय के लिए किया गया बल प्रयोग, परन्तु क्रान्तिकारियों का तो यह उद्देश्य नहीं है। दूसरी ओर अहिंसा का जो आम अर्थ समझा जाता है, वह है आत्मिक शक्ति का सिद्धान्त। उसका उपयोग व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय अधिकारों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। अपने-आपको कष्ट देकर आशा की जाती है कि इस प्रकार अन्त में अपने विरोधी का हृदय परिवर्तन सम्भव हो सकेगा।

एक क्रान्तिकारी जब कुछ बातों को अपना अधिकार मान लेता है तो वह उनकी माँग करता है, अपनी उस माँग के पक्ष में दलीलें देता है, समस्त आत्मिक शक्ति के द्वारा उन्हें प्राप्त करने की इच्छा करता है, उसकी प्राप्ति के लिए अत्यधिक कष्ट सहन करता है, इसके लिए वह बड़े-से-बड़े त्याग करने के लिए प्रस्तुत रहता है और उसके समर्थन में वह अपना समस्त शारीरिक बल प्रयोग भी करता है। उसके इन प्रयत्नों को आप चाहें जिस नाम से पुकारें, परन्तु आप इन्हें हिंसा के नाम से सम्बोधित नहीं कर सकते, क्योंकि ऐसा करना कोष में दिए इस शब्द के अर्थ के साथ अन्याय होगा। सत्याग्रह का अर्थ है सत्य के लिए आग्रह। उसकी स्वीकृति के लिए केवल आत्मिक शक्ति के प्रयोग का ही क्यों, इसके साथ-साथ शारीरिक बल का प्रयोग भी न किया जाए? क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए अपनी शारीरिक एवं नैतिक शक्ति दोनों के प्रयोग में विश्वास करता है परन्तु नैतिक बल का प्रयोग करने वाले शारीरिक बल प्रयोग को निषिद्ध मानते हैं। इसलिए अब सवाल यह नहीं है कि आप हिंसा चाहते हैं या अहिंसा, बल्कि प्रश्न तो यह है कि आप अपने उद्देश्य प्राप्ति के लिए शारीरिक बल सहित नैतिक बल का प्रयोग करना चाहते हैं या केवल आत्मिक शक्ति का। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजभाषा के रूप में हिन्दी

—चन्द्रकांत त्रिपाठी 'चंद्रेश'

भाषा शासन और जनता के बीच की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी होती है। सरकार की नीतियों को जनता तक पहुँचाने का यह एक सशक्त माध्यम है। देश में प्रजातन्त्र की जड़ें जितनी बैठती जा रही हैं, साधारण जनता में प्रशासन के प्रति आस्था और विश्वास उत्पन्न करने के लिए आवश्यक है कि प्रशासन का सारा कामकाज जनता की भाषा में हो।

सांविधानिक औपचारिकता

जब संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया तो यह एक प्राचीन परम्परा को औपचारिक मान्यता देने के समान था। यदि इसको सर्वमान्य में स्वीकार किया जाय कि वह भाषा जो किसी राज्य में केन्द्रीय या प्रादेशिक सरकार द्वारा पत्र-व्यवहार व सरकारी कामकाज चलाने के लिए प्रयोग में आती हो तो इसका प्रयोग प्राचीन काल से चला आ रहा है, चाहे इसके नाम समय-समय पर भिन्न हों। स्वयं हिन्दी नाम, विदेशियों का दिया हुआ है। हिन्दी के अतिरिक्त हिन्दुई, हिन्दवी, दहलवी आदि नाम चलते रहे। हिन्दी के प्रारम्भिक स्वरूप का विकास उत्तर अपभ्रंश कालीन युग से हुआ।

पृथ्वीराज के सिंहासनारूढ़ होने का उल्लेख ११७८ में मिलता है। प्राचीनकाल के सिक्कों का संकेत है कि मुहम्मद गौरी ने सिक्कों पर देवनागरी भाषा का प्रयोग किया। शहाबुद्दीन (११९२ ई०) ने ब्रजमिश्रित भाषा का प्रयोग किया। इस सम्पर्क भाषा का और अधिक विकास तेरहवीं शताब्दी में हुआ जब अलाउद्दीन तथा तुगलक के कारण उत्तर से लोग भारी संख्या में दक्षिण में गए। बाद में प्रशासनिक सुविधा को ध्यान में रखकर सम्राट अकबर ने मालवा, बरार, खानदेश और गुजरात को मिलाकर दक्षिण प्रदेश बनाया। औरंगजेब ने अपने राज्य को ६ इकाइयों में विभाजित किया। उस समय कुछ मुसलमान परिवारों के अलावा सभी व्यापारी और श्रमिक वर्ग खड़ीबोली का प्रयोग करते थे। तत्कालीन खड़ीबोली पर हरियाणा, शेखावटी, मेवाती तथा ब्रज से सम्बन्धित बोलियों का प्रभाव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
था। उत्तर से आकर वसे परिवार अपने घरेलू जीवन में मातृभाषा का प्रयोग करते थे तथा सामाजिक बोलचाल में खड़ीबोली का प्रयोग होता था।

हिन्दी का दक्षिण प्रवेश

हैदरअली और टीपू सुल्तान खड़ीबोली को सुदूर दक्षिण ले गए, जहाँ इसे गोसाई भाषा के रूप में जाना-पहचाना गया। देश का एक कोने से दूसरे कोने तक भ्रमण करने वाले हिन्दी के तीन पहरुए सन्त महात्माओं द्वारा इस भाषा के प्रयोग को बढ़ावा मिला। हैदरअली व टीपू सुल्तान के साथ कोचीन नरेश की जो संधि हुई उसके अनुसार शाही परिवार के सदस्यों को हिन्दुस्तानी सिखाने के लिए कहा गया, परिणामस्वरूप हिन्दुस्तानी सम्बन्धित मुंशी की नियुक्ति हुई और इसे वाकायदा प्रशासन में स्थान दिया।

शेरशाह सूरी के सिक्कों पर नागरी और फारसी दोनों का उल्लेख मिलता है। मुगलकाल में हिन्दी का स्थान लगभग सह राजभाषा का था। अकबर और जहाँगीर को हिन्दी भलीभाँति आती थी। औरंगजेब के काल तक तो हिन्दी की विभिन्न शैलियों का प्रयोग राजभाषा के रूप में व्यापकता से मिलता है। डॉ० केलकर की पुस्तक १८वीं सदी के हिन्दी के पत्र के अनुसार उत्तर भारत के नरेशों-कर्मचारियों आदि को लिखे जाने वाले पत्र हिन्दी में होते थे जो उन्हें पेशवा या मराठा सरकारों से प्राप्त होते थे। राजस्थान की तमाम रियासतों में तो पूरा का पूरा पत्राचार हिन्दी में किया जाता था। सन् १७४५ में बीकानेर नरेश गजेसिंह द्वारा जयपुर के राजा माधोसिंह को लिखा गया पत्र हिन्दी में था। सन् १७७२ में बीकानेर के राजा ने टामस जार्ज वरेन नार्शक तक को हिन्दी में पत्र लिखा था। ग्वालियर नरेश ने २१ नवम्बर, १८५३ को यह राज्यादेश निकाला कि फारसी शब्दों का प्रयोग दण्डनीय है। अलवर में १८०७ में उर्दू के स्थान पर हिन्दी के प्रयोग का आदेश प्रचारित किया गया।

गैर हिन्दी राज्यों या क्षेत्र में भी हिन्दी को प्रश्रय मिला। बड़ौदा नरेश ने "सयाजी शासन शब्द कल्पतरु" नामक प्रशासनिक शब्दकोश तैयार कराया उसमें गुजराती, हिन्दी, बंगला, मराठी आदि रूप दिये गए। हिन्दी की सरलता, अधिकांश लोगों द्वारा बोलचाल में प्रयुक्त किया जाना, राजनीति व्यवहार-क्षमता आदि ने विदेशियों को भी इस भाषा की ओर आकृष्ट किया। हिन्दी का पहला व्याकरण १६९८ ईस्वी में होलैण्डवासी जान जोशुआ केटेलर ने डच भाषा में लिखा। शीर्षक था—"हिन्दुस्तानी भाषा"। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने १८०३ में आदेश निकाला था कि मूल नोट के साथ प्रत्येक अधिनियम को हिन्दुस्तानी में अनूदित किया जाएगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बंगाल का योगदान

वंगलाभाषी साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों ने हिन्दी को सम्पर्क भाषा वनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया। हिन्दी का प्रथम समाचार पत्र कलकत्ता से 'उदण्ड मार्तण्ड' (१८२४) तथा 'बंगदूत' (१८२६) प्रकाशित हुआ। प्रसिद्ध वंगला लेखक भूदेव मुखोपाध्याय ने शिक्षा का माध्यम और १८८१ में विहार की अदालतों में हिन्दी का प्रयोग शुरू कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। केशवचन्द्र सेन ने अपने लिए हिन्दी को ही चुना।

बीसवीं शती के आरम्भ में आजादी की लड़ाई के नायकों ने महसूस किया कि देशवासियों को एकजुट करने में हिन्दी सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध होगी। नागरी प्रचारिणी सभा की सन् १९०५ की बैठक में लोकमान्य वालगंगाधर तिलक ने देश की राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार करने की चर्चा की।

कांग्रेसियों का दृष्टिकोण

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कुछ उच्च पदाधिकारी अंग्रेजी मोह से ग्रस्त थे तथा कार्य अंग्रेजी से ही करना चाहते थे, इन्हीं नेताओं पर व्यंग्य करते हुए आचार्य कृपलानी ने कहा था कि "ये न सिर्फ अंग्रेजी में वोलते हैं वल्कि उसी भाषा में मुस्कराते हैं और सपने भी देखते हैं।"

स्वतन्त्रता आन्दोलन में महात्मा गांधी के पदार्पण के पश्चात् परिवर्तन आया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि सरल और आसानी से समझी जाने वाली हिन्दी उस कसौटी पर खरी उतरी है जो उन्होंने एक राष्ट्रीय भाषा को चुनने के लिए की थी।

गांधीजी ने अनुभव किया कि हिन्दी राष्ट्रकर्मियों तथा पूरे देश में प्रयोग की जाने वाली भाषा है। उन्होंने अंग्रेजी को झरोखा मात्र की संज्ञा देते हुए विचार प्रकट किया था कि अंग्रेजी के झरोखों से हम वाहर की वायु और रोशनी ले सकते हैं लेकिन यदि झरोखे के वदले अंग्रेजी से दरवाजे का काम लिया जाय तो घर कमजोर हो जाएगा। गांधीजी की प्रेरणा से १९२५ में कांग्रेस ने अपनी कार्यवाही का माध्यम हिन्दी को वनाया। हमें नहीं भूलना चाहिए कि देश के वाहर नेताजी सुभाषचन्द्र वोस द्वारा संगठित आजाद हिन्द फौज और अस्थायी भारतीय सरकार ने हिन्दी को सम्मान सहित अपनाया था। वोसजी ने कहा, "हिन्दी अपनी सरलता ग्राह्यता और प्रभावशीलता के कारण राष्ट्र की भाषा वननी चाहिए।"

राजभाषा आयोग

भारत के संविधान के अनुच्छेद ३४३ (१) के अनुसार देवनागरी लिपि में

(शेष पृष्ठ १३ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्मनिरपेक्षता के प्रसंग में

—स्व० श्री गुरुदत्त

भारत में धर्म की विशेष महत्ता है। किन्तु धर्म की धारणाएँ यहाँ विभिन्न हैं अथवा यों कहा जाय कि भ्रान्त हैं तो उपयुक्त होगा। आज पूजा-पद्धति तथा मतमतान्तर को भारत में, केवल भारत में ही क्यों संसार में सर्वत्र ही, धर्म की संज्ञा दे दी गई है। और तभी यह भ्रान्ति पनपी है। 'धर्म' को अंग्रेजी के 'रिलीजन' शब्द का पर्यायवाचक मान लिया गया है।

रिलीजन और धर्म में कहीं भी कोई सामंजस्य, समानता अथवा स्थायी भाव नहीं है। यह पाश्चात्य विद्वानों का दोष है जो धर्म को रिलीजन के साथ नत्थी कर दिया गया है। और हम समझते हैं कि पाश्चात्यों का इसमें इतना दोष नहीं जितना कि पौर्वात्यों का है।

तथाकथित पाश्चात्य विद्वानों ने हमारे प्राचीन ग्रन्थों का मनन एवं मन्थन के नाम पर जब उनको विकृत करना प्रारम्भ किया था, तब यदि पौर्वात्य विद्वान् उन पर अंकुश लगाते तो विकृतियाँ एवं भ्रान्तियाँ न पनपने पातीं। कतिपय पौंगापन्थी पण्डितों ने इसका प्रतिकार तो किया किन्तु प्रताड़ना नहीं। इसीलिए हम उन्हें पौंगापन्थी संज्ञा से विभूषित करते हैं। क्योंकि उन्होंने मात्र इतना ही कोलाहल किया कि इन विदेशियों एवं विजातियों को शास्त्र ग्रन्थों के स्पर्श का अधिकार नहीं है।

उनका यह प्रतिकार सफल नहीं रहा। क्योंकि न तो उन पौंगापन्थियों में आत्मबल था और न उनकी बात में किसी प्रकार का सार था। फिर प्रतिकार किस प्रकार प्रभावी रहता? सबसे बड़ी बात यह थी विदेशी शासनतन्त्र के संरक्षण में वह सब दुष्कर्म हो रहा था तो फिर इनकी बात को कौन मानता?

न केवल इतना, सांसारिक नियमानुसार इस देश में भी दासता की देन पंच-माँगियों की भरमार रही है। अतः कुछ ऐसे पंचमाँगियों ने, अर्थलोलुप पण्डितों एवं पुजारियों ने उन पाश्चात्य पाखण्डियों को प्रणाम कर उनकी धारणा के प्रसार में योग दिया। परिणामस्वरूप धर्म एवं उसकी व्याख्या विकृत हो गई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रिलीजन शब्द धर्म का पर्यायवाची नहीं। रिलीजन से अभिप्राय सम्प्रदाय, पंथ, मत आदि-आदि हो सकता है, धर्म कदापि नहीं। अब यदि अंग्रेजी में धर्म शब्द के लिए कोई उसका समानार्थक शब्द अथवा पर्याय नहीं है तो उसका दोष न हमारी भाषा को है और न ही धर्म शब्द को। अंग्रेजों को अथवा अंग्रेजी भाषा-भाषियों को चाहिए कि वे उसके लिए किसी उपयुक्त शब्द का चयन कर लें अथवा जिस प्रकार उन्होंने इक्का-दुक्का हमारी भाषा के शब्द ग्रहण कर लिये हैं अथवा जिस प्रकार भारतवासियों ने अनेक अंग्रेजी शब्दों का भारतीयकरण कर लिया है उस प्रकार वे भी 'धर्म' शब्द को अपने कोष में इसी रूप में ग्रहण कर उसके व्यापक अर्थों में उसे स्वीकार करें। रिलीजन जैसे संकुचित एवं संकीर्ण शब्द को धर्म का पर्यायवाची बताना उपयुक्त नहीं। यदि अंग्रेज अथवा विदेशी अंग्रेजी-दां इसको स्वीकार नहीं करते तो भारतीयों को अपेक्षित है कि वे धर्म को इसी रूप में अंग्रेजी में प्रयुक्त करना प्रारम्भ कर दें। कालान्तर में यही शब्द अपने वास्तविक रूप एवं अर्थ में संसार में प्रयुक्त होने लगेगा।

इस प्रसंग में यह स्पष्ट कर देना उपयुक्त है कि इस्लाम, क्रिश्चियनिटी आदि धर्म नहीं सम्प्रदाय हैं। ये किसी उपासना एवं पूजापद्धति-विशेष के पर्यायवाचक हैं धार्मिकता के नहीं।

भारत विदेशी साम्राज्य से तो मुक्त हो चुका है किन्तु मनसा भारतवासी अभी दास प्रवृत्ति के ही हैं। यही कारण है कि अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य के आधार पर भारत के सर्वस्व की तुलना की जाती है और अर्थ अथवा पर्याय प्रकट किये जाते हैं। यह अधर्म दिनानुदिन बढ़ता ही जा रहा है जबकि कालक्रम में इसे समाप्ति की ओर अग्रसर होना चाहिए था। अंग्रेजी और अंग्रे जियत के प्रति हमारा मोह बढ़ता जा रहा है।

धर्म वास्तव में करणीय कर्तव्य को कहते हैं। मनुस्मृति में धर्म के लक्षण एवं उनकी विस्तृत व्याख्या वर्णित है जिसे समय-समय पर हम इन पृष्ठों पर उद्धृत करते रहे हैं। यहाँ पुनरावृत्ति करके स्थान और पाठकों के समय का अपव्यय करना होगा। मनु ने ही 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' यह भी कहा है। जब हम किसी बात के लिए कहते हैं कि "अमुक कार्य करना हमारा परम धर्म है" तब यहाँ पर धर्म का अभिप्राय करणीय कर्तव्य से ही होता है।

धर्मनिरपेक्षता का धार्मिकता से कहीं दूर का भी सम्बन्ध नहीं। न ही सैक्युलरिज्म का अभिप्राय धर्मनिरपेक्षता है। भारत में सैक्युलरिज्म के मसीहा नेहरू को न भाषा-विज्ञान का ज्ञान था और न उसके मुसाहिबों एवं चाटुकारों को। यही कारण है कि तत्कालीन चाटुकार भाषाविदों ने सैक्युलरिज्म के स्थान पर भारतीय भाषा में धर्मनिरपेक्षता प्रचलित करा दिया।

धर्मनिरपेक्षता के आधार पर यदि भारत अधार्मिक हो गया तो फिर इसके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गर्त में जाने में एक क्षण का भी समय नहीं लगेगा।

भारतीय जन नितान्त धार्मिक प्रवृत्ति का है यही कारण है कि शासकों के नितान्त अधार्मिक होने पर भी भारत का अस्तित्व अक्षुण्ण है। शासकों के अधार्मिक होने से हमारा अभिप्राय कर्तव्य-विमुख होने से है।

अन्त में हम अपने पाठकों एवं समस्त भारतीय जनता से कहना चाहते हैं कि धर्मनिरपेक्षता एवं सैक्युलरिज्म में अन्तर को समझें और तदनुरूप अपना व्यवहार स्थिर करें। और यह भी कि धर्म शब्द का रिलीजन से किसी प्रकार का सामंजस्य नहीं, इस सत्य को भी जान लें।

(पृष्ठ १० का शेष)

लिखित हिन्दी संघ की राजभाषा है और संघ के शासकीय उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप है। सन् १९५५ में राजभाषा आयोग की स्थापना हुई, आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए १९५७ में एक संसदीय समिति बनाई गई। आयोग और संसदीय समिति दोनों का मत था कि १९६५ के बाद भी अंग्रेजी का प्रयोग चलते रहना चाहिए। सिफारिशों को कार्यरूप देने की दृष्टि से संसद ने १९६३ में राजभाषा अधिनियम पारित किया, १९६७ में इसे संशोधित किया गया। संघ की राजभाषा से सम्बन्धित विभिन्न संवैधानिक और कानूनी उपबन्धों को कार्यरूप में परिणत करने के उद्देश्य से केन्द्रीय सरकार ने सन् १९७६ में राजभाषा (संघ) के सरकारी प्रयोजनों के लिए प्रयोग नियम बनाए थे। ये नियम सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए व्यापक मार्गदर्शक सिद्धांतों की भूमिका निभाते हैं और विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट उत्तरदायित्वों का निर्धारण करते हैं। ये नियम हिन्दी के प्रयोग में तेजी लाने में बहुत सहायक सिद्ध हुए हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्रान्ति के महान् नायक—सरदार भगतसिंह

देशभक्ति उनकी धुन थी, निडरता उनका गुण और सम्पूर्ण प्रभुतासम्पन्न भारतीय समाजवादी गणतन्त्र उनका स्वप्न था। उन्हें अपने पवित्र सिद्धान्तों की कीमत पर कोई समझौता मान्य नहीं था। २४ वर्ष की युवावस्था में ही उन्होंने अपने जीवन का बलिदान कर दिया। ऐसी अलौकिक वीर विभूति भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम महान् नायक भगतसिंह ही थे जो अन्ततः स्वयं क्रान्ति के प्रतीक बन गए।

भगतसिंह का जन्म पंजाब के खटकर कलां गाँव में २७ सितम्बर १९०७ को हुआ था। वह देशभक्त संधु जाट परिवार में जन्मे थे। उनके पिता सरदार किशन-सिंह गदर पार्टी के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे और उसकी पैसे से भी मदद करते थे। इस युवा भगतसिंह को रासबिहारी बोस और सरदारसिंह सराया जैसे महान् क्रान्ति-कारियों के सम्पर्क में आने का अवसर मिला तथा इनके जीवन और बलिदानों ने भगतसिंह के राजनैतिक विचारों को सर्वाधिक प्रभावित किया।

क्रान्तिकारियों से सम्पर्क

पश्चिमी, मेधावी और अनुशासित भगतसिंह को ऐतिहासिक नायकों के प्रति गहरा मोह था। उन्होंने छात्र-जीवन में मंच पर महाराणा प्रताप और चन्द्रगुप्त मौर्य का अभिनय किया। उस समय के क्रान्तिकारियों के साथ अनवरत सम्पर्क और तत्कालीन घटनाचक्र को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखने की उनकी प्रतिभा ने उनको छोटी आयु में ही एक कुशल राजनैतिक प्रशिक्षु रूप से भाग लेना शुरू कर दिया। १९२१ में गांधीजी के ब्रिटिश सरकार से सहायता प्राप्त स्कूलों और कॉलिजों के बहिष्कार के आह्वान पर स्कूल छोड़ने वाले वह पहले छात्र थे। उन्होंने लाहौर के डी० ए० वी० स्कूल को छोड़ दिया और भाई परमानन्द व लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित कौमी कॉलिज में भर्ती हो गए।

१९२४ में उन्होंने कॉलिज छोड़ दिया और राष्ट्रीय स्वाधीनता के पवित्र लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने आपको पूरी तरह समर्पित कर दिया। इसी बीच वे उत्तर प्रदेश में गणेशशंकर विद्यार्थी के घनिष्ठ सम्पर्क में आए और कुछ समय तक उनके समाचार-पत्र के लिए कार्य किया। उनके लेख बहुत पैने और सशक्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होते थे जो पाठकों को राष्ट्रीय गतिविधियों के बारे में सोचने को विवश करते थे तथा ब्रिटिश सरकार द्वारा किए जा रहे शोषण के विरुद्ध गहरी चेतना जगाते थे। विद्यार्थी जी के साथ कार्य करते हुए भगतसिंह भारत के अन्य भागों में सक्रिय क्रान्तिकारियों से भी मिले। वह हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन में शामिल हो गए जिसका नाम बाद में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन सोशलिस्ट एसोसिएशन हो गया था। उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार और राजस्थान के क्रान्तिकारियों का यह प्रमुख संगठन था।

भारत नौजवान सभा

हिन्दुस्तान रिपब्लिकन सोशलिस्ट एसोसिएशन में उनका प्रवेश १९२६ में लाहौर में भारत नौजवान सभा के संगठन की दिशा में प्रथम कदम था। यह सभा सामाजिक एवं शैक्षिक विषयों पर वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ आयोजित करती थी और भारतीय संस्कृति और भाषाओं के प्रति गौरव की भावना जगाने के साथ-साथ 'स्वदेशी' को लोकप्रिय बनाने का काम करती थी। सभा का प्रमुख कार्य लोगों का जादुई लालटेनों और प्रोजेक्टर स्लाइडों के माध्यम से क्रान्तिकारियों की गतिविधियों से अवगत कराना था। यह तरीका लोगों के मन में ब्रिटिश विरोधी भावनाएँ जागृत करने में शीघ्र ही बहुत कारगर सिद्ध हुआ।

गाँवों के निरक्षर और सीधे-सरल लोगों तक सन्देश पहुँचाने के लिए उन्होंने साधारण बोलचाल की भाषा में साहित्य प्रकाशित किया।

यह प्रचार पंजाब, संयुक्त प्रान्त, दिल्ली और जम्मू-कश्मीर के आन्तरिक भागों में दूर-दूर तक फैल गया। साम्प्रदायिक भेदभाव की सीमाओं से परे इस संदेश ने धर्मनिरपेक्ष स्वरूप ग्रहण कर लिया। भारत नौजवान सभा की गतिविधियों में भगतसिंह की सक्रियता का उल्लेख करते हुए सभा के एक प्रमुख कार्यकर्त्ता ने एक बार कहा "भगतसिंह ईश्वर में या किसी धर्म में विश्वास नहीं रखते थे।" इतिहास पर दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि ईसाइयों ने क्रूसेड्स और मुसलमानों ने जेहाद उसी एक भगवान् के नाम पर ही चलाए। क्योंकि कोई व्यक्ति उसी धर्म का अनुयायी नहीं है तो क्या उसकी हत्या कर दी जानी चाहिए? क्या यही ईश्वर की आज्ञा है? सारे झगड़े भगवान् के नाम पर हुए। तो जब भगवान् के नाम पर सम्प्रदायों के मध्य खड़ी की गई दीवार हटा दी जाएगी तब जिन हिस्सों में समाज को कृत्रिम रूप में बाँट दिया गया है, वे नष्ट हो जाएँगे और मानवता सर्वत्र व्याप्त हो जाएगी।

पूर्ण स्वराज्य

इन सारे प्रयासों का लक्ष्य अंग्रेजी राज्य की 'बाँटो और शासन करो' की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नीति को विफल करना तथा मजदूरों, किसानों और युवावर्ग को उनके विरुद्ध संगठित करना था। इसके साथ ही भगतसिंह ने १९२८ में लाहौर विद्यार्थी संघ का गठन किया। क्रान्तिकारियों की गतिविधियाँ चाहे कितनी भी सीमित क्यों न रही हों, वे 'पूर्ण' स्वराज्य के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़प्रतिज्ञ थे। इस दृढ़ निश्चय का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की दिसम्बर १९२९ में पूर्ण स्वराज्य की घोषणा में निश्चित रूप से योगदान था।

जब अंग्रेजी सरकार ने और सुधारों पर विचार करने के लिए साइमन कमीशन की नियुक्ति की तो उसे अक्तूबर १९२८ में देशव्यापी विरोध का सामना करना पड़ा। लाहौर में लाला लाजपत राय ने बहिष्कार प्रदर्शन का नेतृत्व किया और भगतसिंह ने उसमें भाग लिया। पुलिस ने लाठी चार्ज किया जिसमें लाला लाजपत राय समेत कई प्रदर्शनकारी घायल हुए। लाला लाजपत राय ने बाद में दम तोड़ दिया। इस घटना से भगतसिंह को गहरा आघात पहुँचा और उन्होंने पुलिस अधीक्षक स्काट से लाला जी की मृत्यु का बदला लेने की ठानी। भगतसिंह ने राजगुरु, सुखदेव और आजाद से मिलकर एक विस्तृत योजना तैयार की। पर संयोगवश इस योजना में सहायक पुलिस अधीक्षक जे० पी० सौन्डर्स की हत्या हो गई।

इस घटना से भगतसिंह को तुरन्त ख्याति मिली। सौन्डर्स हत्याकाण्ड के बारे में लिखते हुए पंडित नेहरू ने अपनी जीवनी में लिखा, "वे (भगतसिंह) एक प्रतीक बन गए, वह घटना (सौन्डर्स की हत्या) भुला दी गई, पर उसका प्रतीक विस्मृत न हुआ और कुछ ही महीनों के अन्दर पंजाब का प्रत्येक शहर और गाँव तथा कुछ कम सीमा तक शेष उत्तरी भारत में उनका नाम घर-घर पहुँच गया। उनके बारे में अनगिनत गीत मशहूर हुए और इस व्यक्ति ने जो प्रसिद्धि प्राप्त की वह आश्चर्य-जनक थी।"

भगतसिंह ने अपने बाल कटवा दिए और पुलिस को चकमा देने हेतु लाहौर छोड़कर कलकत्ता चले गए। वहाँ से वे खुफिया ढंग से उत्तर प्रदेश और बंगाल के क्रान्तिकारी लोगों के बीच आने-जाने लगे।

असेम्बली बम-काण्ड

हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की बैठक में प्रस्तावित सार्व-जनिक सुरक्षा विधेयक और व्यापार विवाद विधेयक की आलोचना की गई। विरोधस्वरूप यह योजना बनाई गई कि इम्पीरियल एसेम्बली में सत्र के दौरान एक बम फेंककर स्वयं को गिरफ्तार कराया जाए ताकि अदालत में अपने विचारों को अभिव्यक्त किया जा सके। भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को इस योजना को

(शेष पृष्ठ ३० पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समय बचाने की कला

—रेमॉण्ड शुएसलर

प्रसिद्ध लेखक विक्टर ह्यूगो ने कहा था—"जो व्यक्ति सुबह ही अपने दिन-भर के कामों की योजना बना लेता है और उस पर चलता है, उसके हाथ एक ऐसा सूत्र लग जाता है, जो व्यस्त-से-व्यस्त जीवन की भूलभुलैयों में से रास्ता दिखाता है। अपने समय की योजना बनाना एक ज्योति-किरण की तरह है जो उसके सभी कामों में उसे रोशनी दिखाती है। लेकिन जहाँ समय को घटनाओं के आसरे छोड़ दिया जाता है, वहाँ सभी चीजें मिलकर ऐसी खिचड़ी बन जाती हैं कि उन्हें छाँटकर न तो अलग-अलग बाँटा जाता है और न ही उन पर विचार किया जा सकता है।"

कौन आदमी नहीं चाहता कि उसके पास इतना समय हो कि वह अपना काम पूरा कर सके, अलमारी में रखी पुस्तकों को पढ़ सके, अपने शौक को पूरा कर सके, यात्रा कर सके और आराम कर सके। लेकिन इसका अहसास चन्द लोगों को ही होगा कि वे हर दिन में एक घण्टा बढ़ा सकते हैं। 'समय के मूल्य की बात तो हरेक करता है, लेकिन ऐसे लोग कम ही हैं जो उस पर आचरण करते हैं।' लार्ड चेस्टर-फील्ड ने एक जगह कहा था।

मिनटों को छीनिए

समय बचाने का रहस्य क्या है? मिनटों को बचाइए। संसार में व्यस्ततम लोग मिनटों को छीन-झपट लेने वाले होते हैं। इस तरह अन्य लोगों के मुकाबले अपने लम्बे दिनों की जो कमाई वे इकट्ठी कर लेते हैं, उससे उन्हें दुनिया के हर कोने में अपना नाम रोशन करने में मदद मिलती है। जरा एक ही घण्टा सुबह बेकार चला जाने दीजिए, फिर आप उसे कभी पा नहीं सकेंगे। मान लीजिए कि आपको सुबह उठने से नफरत है तो आर्थर गोल्ड फ्रे के इस नस्खे को आजमाइए—

'बहुत पहले मैंने ऐसा तरीका सीखा जिससे सब कहीं दिन-भर में २० से ५० मिनट तक मैं बचा लेता हूँ। आँख खुली नहीं कि मैं उठ बैठता हूँ। बिस्तरे पर पड़े-पड़े मछरते रहने से तो जो कुछ होता ही है, उसे सिर्फ हम टालते ही हैं। आँख खुलते ही चादर उतार कर बिस्तर पर से उठ बैठने से आपको एक घण्टा उसी समय मिल जाएगा।'

कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें आँख खोलते ही बिस्तर छोड़ने की बात अखरती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। यदि आप उनमें से एक हैं तो आप उस आदमी की जिन्दगी पर निगाह डालिए जो बिस्तर में मछरते रहने वाला होते हुए भी सफल रहा।

'सर विन्स्टन चर्चिल' उनके एक निजी सेवक के शब्दों में, "हम यह सोचते थे कि जब बैठ सकते हैं तो खड़े रहना बेवकूफी है या जब लेट सकते हैं तो बैठे रहना बेवकूफी है। इसलिए वह सुबह-सुबह का समय बिस्तर पर पड़े-पड़े आरामतलबी में बिताते थे। गद्दे और तकिये पर अपने हाथ-पैरों को ढीला करके फेंकते और उसी समय में बहुत सारा पढ़ भी डालते, अनेक चीजें लिखवा देते और कितना ही कागजी काम खत्म कर डालते।"

चन्द मिनटों को सँभाल लेना एक अचूक नुस्खा है। शेक्सपीयर का कथन है कि "यदि आप समय को बर्बाद करोगे तो समय आपको बर्बाद करके छोड़ेगा।"

इतिहास कैसे बदला

मिनटों के खेल ने ही इतिहास का मोड़ समय-समय पर बदला है। समय की यह खिलवाड़ न होती तो शायद अमेरिका अंग्रेजों का ही उपनिवेश बना रहता और नेपोलियन वाटरलू का विजेता होता और टिटानिक को बचा लिया जाता।

टिटानिक के डूबने के कारण जो अनेक जानें गईं, उनको बचाने के लिए केवल एक मिनट की जरूरत थी, केवल एक मिनट की। रात्रि ११.४० को एक भयंकर हिमखण्ड दिखाई दिया। उसे बचाने में उस बड़े जहाज की बाजू की तरफ एक गहरा छेद हो गया और उसके पहले पाँच भागों में पानी घुस गया। यदि उस हिम-खण्ड को एक मिनट पहले देख लिया होता, तो इस खतरे से बचा जा सकता था। यदि एक मिनट गुजर जाता तो जहाज के मुड़ने की गुंजाइश ही न रहती और जहाज के अगले कुछ हिस्सों पर ही हिमखण्ड की चोट बैठती। इससे केवल २ या ३ हिस्सों में पानी जाता और जहाज तैरता रहता।

समय ने नैपोलियन पर भी रहम नहीं किया। वाटरलू की लड़ाई के समय उसने चन्द मिनटों का गलत अन्दाज लगा लिया। जब उसे पर्शिया की सेनाओं से मदद मिलती और इन्हीं चन्द मिनटों के कारण मैदान हाथ से जाता रहा और उसने जल्दी में आकर आत्मसमर्पण कर दिया।

ट्रीनटन के मोर्चे पर जार्ज वाशिंगटन को जो प्रसिद्ध विजय प्राप्त हुई वह एक गम्भीर पराजय का रूप ले लेती, यदि वह ठीक समय पर आक्रमण करने का निर्णय न करता। उसे जब हैसान कैम्प के जासूस से यह पता लगा कि क्रिसमस को बड़े धूमधाम से मनाने की योजना बना ली गई है, तो उसने मौके का लाभ उठाकर सुबह होने से एक घण्टा पहले ही हमले की योजना बना ली।

अँधेरे के घटाटोप में उन्होंने नदी को पार किया और सुबह पौ फटते ही वाशिंगटन और उसके सैनिक दुश्मन के कैम्प में जा धमके। रात के समारोह में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शराब पीकर हैसान के सैनिक इतने मदहोश थे कि वे इस आक्रमण से अचकचे-से रह गए। एक घण्टा भी नहीं लगा कि पूरे गाँव पर कब्जा हो गया और एक भी अमरीकी सैनिक नहीं मारा गया।

हम सभी के जीवन में समय का यह नाटक होता है। बहुपठित पुस्तक 'हाऊ टू गेन एक्सट्रा ऑवर एवरी डे' (हर दिन एक घण्टा कैसे प्राप्त किया जाए?) के लेखक रे जोसफ का कथन है कि "हममें से सभी लोगों के लिए काम करने के लिए २४ घण्टे ही होते हैं। आपका दिन एक ऐसा बैंक है, जिसमें से मिनटों और घण्टों की शक्ल में आप अपनी धरोहर निकाल सकते हैं। उसकी पूर्ति सीमित है। यदि बिलकुल ठीक कहें तो आपके पास १,४४० मिनट होते हैं, लेकिन आप उतनों को भी काम में नहीं लाते।"

आदतों को कैसे ढालें

शॉपनहावर का कहना है कि आम आदमी सोचते हैं कि वे समय को कैसे गुजारें जबकि बुद्धिमान व्यक्ति उसका उपयोग करने की कोशिश करता है। अक्सर लम्बे अर्से से चली आ रही आदतें, जैसे नहाना-धोना या दातुन वगैरा करना समय को खराब करने वाली होती हैं। आर्थर विल्सन नहाने के फ़व्वारे के नीचे बैठकर अपनी शेव करते हैं। मेरी मारगरेट मेकब्रिज सुबह 'शावर बाथ' लेने की जगह रात को 'टब बाथ' लेने लगी हैं और अपने कार्यक्रम के इस परिवर्तन के बारे में उनका कहना है, "रात को टब में स्नान करते समय दिन भर की थकान और तनाव से भी मुझे राहत मिल जाती है।" इस तरह समय के उपयोग का सबसे अच्छा तरीका बर्बाद जाने वाले समय को इस्तेमाल करने का है।

आप अपनी पोशाक किस तरह पहनते हैं, इसमें भी समय की बचत का रहस्य छुपा हुआ है। हममें से बहुतों को जरा तब देखिए जब वे कपड़े पहनते हैं। कभी शीशे के पास, कभी जूतों को रैंक के पास, कभी इस तरफ, कभी उस तरफ। इस तरह कितना ही कीमती समय वे खराब कर डालते हैं। क्यों नहीं रंगों के अनुसार सूटों, कपड़ों, दस्तानों और नेकटाइयों को तरतीब से रख लेते हैं? कपड़ों का मैच मिलाने में अनावश्यक समय खर्च नहीं होगा। अपने पहनने के कपड़ों की जरूरतों के ग्रुप क्यों नहीं बना लेते?

जागने, नहाने, शेव करने और कपड़े पहन लेने के बाद आप दफ्तर को चल पड़ते हैं, लेकिन क्या आपको दिन-भर के कामों का पूरा अनुमान है? यदि नहीं है, तो जरा नीचे जो बड़े-बड़े अमेरिकी उद्योगपतियों के विचार दिए गए हैं, उन पर गौर कीजिए।

समय ही व्यापार

हेमिल्टन वाच कम्पनी के प्रेसीडेण्ट आर्थर बी० सिंकलर के शब्दों में "समय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बचाने को भी समय चाहिए। समय ही हमारा व्यापार है और हमने होशियारी से इसे काम में लेना सीखा है। एक घण्टे में जो आप कर सकते हैं, उससे ज्यादा खींचतान करने की कोशिश न करिए। आपने खरगोश और कछुए की दौड़ की कहानी तो पढ़ी ही होगी? दौड़ने की जगह, यदि आप दफ्तर के कामों में चलने की नीति अपनाएँगे तो आपको देर लगाने वाली चीजें दूर से ही नजर आ जाएँगी और आप उनसे बचकर कदम उठाएँगे।"

महाकवि टेनीसन ने इस विचार को इन शब्दों में व्यक्त किया है, "समय एक उन्मादी और छितराई हुई धूल है।"

प्रसिद्ध वित्त-प्रबन्धक स्वर्गीय श्री बरनार्ड ब्रच का कहना है, 'एक समय में एक ही काम समाप्त कर डालने की आदत से मैं सबसे अधिक समय बचा पाया हूँ।"

बहुत से कार्यकारी लोग टेलीफोन में भी समय बचाने की कला को जानते हैं। एक तरीका तो यह है कि आप ऐसे टेलीफोन का इस्तेमाल करें जिसे हाथों से पकड़ने की जरूरत नहीं होती। दूसरा तरीका यह है कि दिन के किसी हिस्से में तय कर लें आप बाहर से आने वाले टेलीफोन पर बात नहीं करेंगे। लेकिन इस बारे में पहले आपको अपने साथियों और जानने वालों को बता देना होगा और यह भी कि वे इसका सख्ती से पालन करें। आप किसी मीटिंग में हैं या अपने सैक्रेटरी को कुछ लिखवा रहे हैं या रिपोर्ट पढ़ रहे हैं और बीच-बीच में आपको टेलीफोन की घण्टी से भी निबटना पड़ता है, तो ऐसी हालत में जो समय लगेगा उसके मुकाबले बिना किसी बाधा के इन कामों को करने में कहीं कम समय लगेगा।

एक अधिकारी को विन्सली होमर के प्रिण्ट्स बहुत भाते थे और वह दफ्तर में रखा करता था। वह उन्हें दीवार पर फैला देता था, जिससे वह उनका आनन्द लेता रहे। लेकिन जल्दी ही उसने अनुभव किया कि जो भी कोई आता है, वह असली बात करने से पहले पाँच मिनट या उनसे ज्यादा समय तो होमर पर बात-चीत करने में ही खराब कर देता है।

प्रतीक्षा के पल

आप बसों में जाते हैं या रेल में, इन्तजार आपको अक्सर करना ही पड़ता है, कभी-कभी तो आपको पता ही नहीं होता कि इन्तजारी का यह वक्त कितना लम्बा होगा। क्यों नहीं आप अपने साथ पढ़ने के लिए कुछ मसाला रख लेते?

कामकाजी महिलाएँ

शायद समय को बचाने के नुक्तों को जानने की सबसे ज्यादा जरूरत तो उन गृहणियों को है, जो घर से बाहर भी रह कर काम करती हैं, अव्यवस्थित रसोईघर

(शेष पृष्ठ २४ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या है सर्वधर्म समभाव ?

—विद्यासागर विद्यालंकार

भारतीय इतिहास के जिस रूप ने हमारी मन-बुद्धि में स्थान बनाया है, वह यह है कि इस देश की भूमि पर निर्माण—बौद्धिक और भौतिक—की प्रक्रियाएँ प्रबल रही हैं, परन्तु इस निर्माण में आन्तरिक मतभिन्नता-असन्तोष-आक्रोश-संघर्ष-विघटन और विभाजन को प्रक्रियाएँ भी कम प्रबल नहीं रहीं। आज भी ये शक्तियाँ सक्रिय हैं। वर्तमान भारतीय स्थिति पर विचार करने से पूर्व हमें अतीत के उन प्रसंगों को ध्यान में रखना होगा जिन्होंने वर्तमान स्थितियों के निर्माण में योगदान किया है। देवासुर संग्राम से बौद्ध-विद्रोह तक ये दोनों प्रक्रियाएँ साथ-साथ सम्पन्न होती रहीं, परन्तु साथ ही ये भारतीय चिन्तन-परम्परा को भी समृद्ध करती रहीं। शंकराचार्य के आविर्भाव तक बौद्ध धारा लुप्त हो गई, परन्तु एक और धारा—जैन धारा शान्त भाव से देश में प्रवाहित होती रही, यद्यपि इस धारा के सीधे टकराव के उदाहरण विरल हैं, पर अपनी आन्तरिक शक्ति के आधार पर यह धारा समानान्तर रूप से निरन्तर प्रवाहित हो रही है। साथ ही ये उल्लिखित धाराएँ तथा अन्य अगणित धाराएँ-पन्थ-सम्प्रदाय समानान्तर रूप से प्रवाहित होते हुए भी समाज की विच्छिन्नता अथवा विघटन का कारण बनने के स्थान पर एक ही मुख्य धारा का अंग बनी रहीं, यद्यपि ये विभिन्न धाराएँ धार्मिक रूप भी ग्रहण करती रहीं, फिर भी किसी एक संगठित धर्म के निर्माण की प्रवृत्ति उत्पन्न नहीं हुई, केवल पारस्परिक सम्मान और सहिष्णुता के कारण एक ही समाज का अंग बनी रहीं। इस बीच अनेक अन्य धाराएँ प्रकट हुईं, लुप्त हुईं, और अनेक धाराएँ पूर्व धाराओं में समाहित हो गईं, किसी भी विप्लव-संघर्ष का अवशेष छोड़े बिना। 'सर्वधर्म समभाव' की यह लोक-भावना लम्बे समय तक हमारा 'सामाजिक धर्म' बनी रहीं।

परन्तु पश्चिमी एशिया से मुस्लिम आक्रमणों से स्थिति में एकदम परिवर्तन आया। ये आक्रमण मुख्य रूप से संकीर्ण धार्मिक एवं देश की धन-सम्पत्ति को लूटने के उद्देश्य किये गए। ये आक्रमणकारी पूरे उन्माद के साथ आक्रमण के शिकार क्षेत्र के प्रत्येक व्यक्ति को इस्लाम में दीक्षित करते थे, बहुधा तलवार के बल पर। दीक्षा का विरोध करने वाले को जीवित नहीं रहने देते थे। दीक्षित जन इस नए धर्म का विरोध न करने पाएँ, इसलिए आक्रमणकारी वहाँ अपनी शासन-व्यवस्था

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करते थे और निरीक्षण चौकियों के रूप में मस्जिदों का निर्माण करते थे। इस्लाम से बाहर का व्यक्ति उनके लिए काफिर था। इसलिए जब इस देश पर उन्होंने सिन्ध की ओर से आक्रमण किया तो इस पूरे देश को ही उन्होंने हिन्दू नाम दिया, इस देश के हिन्द के वासियों को 'हिन्दू' नाम दिया क्योंकि इन वासियों का सामाजिक धर्म 'सर्वधर्म समभाव' था, इसलिए सभी धाराओं-पन्थों-सम्प्रदायों और धर्मों का सामूहिक नाम 'हिन्दू धर्म' दिया। 'हिन्दू-धर्म' अपने आप में कोई धर्म नहीं है क्योंकि 'हिन्दू धर्म' की और कोई परिभाषा नहीं है, सिवाय इसके हिन्दवासी हिन्दुओं का सामाजिक धर्म, धार्मिक धर्म नहीं, 'सर्वधर्म समभाव' था, और इस्लाम इसका अपवाद था। इसी कारण देश के विभाजन से पूर्व मोहम्मद अली जिन्ना प्रायः कहा करते थे कि पाकिस्तान का जन्म उसी दिन हो गया था जिस दिन 'हिन्द' का पहला हिन्दू मुसलमान हुआ था। कारण स्पष्ट था कि कोई मुसलमान 'सर्वधर्म समभाव' स्वीकार करने को तैयार नहीं था। क्योंकि उनकी दृष्टि में इस्लाम सर्वोच्च धर्म था, फिर वह 'हिन्द' का शासक बन गया था। वस्तुतः धर्म-परिवर्तन —हिन्दू का मुसलमान बनना — विघटन की प्रक्रिया का समारम्भ है और विघटन के विभाजन में परिवर्तित होने की प्रक्रिया हम देख चुके हैं। अब इस देश में जो प्रक्रिया चल रही है वह है सम्पूर्ण देश को 'मुस्लिम देश' बनाना। इससे उत्पन्न होने वाले आक्रोश को दबाने के लिए 'हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई आपस में सब भाई-भाई' के नारे के साथ धार्मिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक धुंधलका उत्पन्न कर 'समभाव' की ही कब्र तैयार की जा रही है।

इस प्रक्रिया का एक सामाजिक पक्ष भी है, जिसे इस देश के निवासी प्रारम्भ से ही अनुभव करते आ रहे हैं कि धर्म-परिवर्तन करने वाले इस देश के, इसी धरती के हैं। इनके निकट अध्ययन से देखा जा सकता है कि इनमें अन्तः और बाह्य दोनों स्तरों पर परिवर्तन हो गया है। गत सवा हजार वर्ष में इन्हीं लोगों की एक विशाल सेना तैयार हो गई है जो अब विश्वास करती है यह धरती उन्हीं की है, इस धरती पर केवल उन्हीं के धर्म का, उन्हीं के विश्वासों का ही राज्य हो सकता है, वे किसी पूर्ववर्ती धारा में सम्मिलित होकर 'सर्वधर्म समभाव' में विलीन नहीं हो सकते। इसलिए वे पृथक् धर्म के साथ अपने लिए पृथक् कानून, पृथक् व्यवहार की माँग करते हैं, उसके लिए संघर्ष करते हैं। इन्हें मुख्य धारा में लाने के जो प्रयास किए जाते हैं, उसका वे स्वयं तो विरोध करते ही हैं, भारतीय राजनीतिकी कांग्रेस कल्चरी विचारधारा उसका साथ देने के लिए सदा तत्पर रहती है और सक्रिय रूप से उनकी आकांक्षाओं को मूर्त रूप देती है। इसी मानसिकता के कारण कश्मीर के लिए संविधान में अनुच्छेद ३७० जोड़ा गया, शाहबानो के पक्ष में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिये गए निर्णय को बदलने के लिए संसद द्वारा कानून में ही संशोधन किया गया। इसी साम्प्रदायिक सहयोग को कांग्रेस कल्चर में 'धर्मनिरपेक्षता' का नाम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिया जाता है। इसी अनुच्छेद ३७० और धर्मनिरपेक्षता का 'ताण्डव नृत्य' कश्मीर में हो रहा है। इसी प्रकार की धर्मनिरपेक्षता का ताण्डव नृत्य सिख-प्रसादन से निर्मित सिख-बहुल पंजाबी सूबे में हो रहा है, दोनों स्थानों पर बलि 'सर्वधर्म समभाव' के सामाजिकों की चढ़ाई जा रही है। ये बलि लेने वाले मजहब और कौम के सदस्य इसी देश की सन्तति हैं। जिस मजहब और कौमियत को इन वर्गों ने स्वीकारा है उन्हीं के पवित्र ग्रंथों में मानवता, सत्य, परोपकार, दया, पवित्रता, ईमानदारी आदि चारित्रिक और नैतिक गुणों को गाथाएँ और गीत भरे पड़े हैं, वे उन्हें रटते भी हैं और ग्रन्थों पर हाथ रखकर उन गुणों की महिमा का प्रत्येक मजलिस-मजमे में और संगत में उद्घोषणाएँ भी करते भी हैं, फिर भी इनमें से किन्हीं नैतिक चारित्रिक गुणों का कश्मीर-पंजाब में मूर्त होते नहीं देखा गया। यह अवश्य है कि इन क्षेत्रों में आतंकवादियों के मारे जाने पर मानवतावादी संगठन उन आतंकवादियों पर होने पर तथाकथित अत्याचारों को रोकने के लिए जागृत् हो उठते हैं, परन्तु आतंकवादियों द्वारा बलि चढ़ाए गए सामाजिकों की हत्या पर न मानवतावादी संगठनों की चेतना जागृत् होती है, न राजतन्त्र की।

इसलिए समस्या के मूल में जाने के लिए गत सवा हजार वर्ष में 'सर्वधर्म समभाव' के सामाजिकों की अत्याचार-अनाचार, विभिन्न प्रचार की यातनाओं और पीड़ाओं को सहते जिस मानसिकता का निर्माण हुआ है, उसका अध्ययन-विश्लेषण कर उसके कारणों के दर्शन करने होंगे। इन सामाजिकों के अनेक वर्गों ने पूर्ण आत्मसमर्पण कर या तो आक्रमणकारियों के सहयोगी रूप में परिवर्तित होने का साहस किया है, कुछ वर्गों ने इसे अर्थ-साधन का मार्ग मानकर आर्थिक सम्पन्नता तथा राजकीय मान-सम्मान अर्जित किया है, कुछ ने सामाजिक-सांस्कृतिक-बौद्धिक रूप में परिवर्तित होकर काल और युग का अतिक्रमण कर रूढ़ अर्थों में बिना धर्म परिवर्तन किए क्रान्तिकारी दिशा ग्रहण कर अपनी आधुनिकता का परिचय दिया है। ये वर्ग इसीलिए विभिन्न सम्मोहक शब्दों, आयातित आधुनिक शब्दावलियों, तर्काभासों, व्यंग्यों और सार्वजनिक नारों द्वारा उन सामाजिक वर्गों को दिग्भ्रमित करने का प्रयास प्रयत्न करते हैं कि यदि आक्रमण कर आक्रान्त वर्ग की भूमि, पूजा-स्थल, मन्दिर, कीर्तिस्तम्भ पर मस्जिद या चर्च बना दिए गए हैं, आक्रमण के उन स्मारकों को हटाकर उस स्थान पर पुनः किसी देव मन्दिर की स्थापना साम्प्रदायिकता है। यदि कोई धार्मिक साम्प्रदाय अपने शक्ति-वैभव के दिनों में विजयोन्मत्त होकर आक्रमण कर किसी दूसरे सम्प्रदाय के देव स्थान पर अपना धार्मिक प्रतीक मस्जिद या गिरिजा खड़ा कर दे तो ये क्रान्तिकारी सामाजिक दोनों हाथ उठाकर अपने क्रान्तिकारी होने की घोषणा करने वाले धर्मनिरपेक्ष होते हैं, यदि इस प्रकार के आक्रमण का दण्ड भोगने वाले वर्ग अवसर आने पर आक्रमण की इस स्थिति को समाप्त कर देव स्थान की पुनः स्थापना करना चाहते हैं तो उसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
साम्प्रदायिकता घोषित किया जाता है। आज की भारतीय राजनीति इसी धुरी पर घूम रही है। राजनीति के भ्रामक चक्र को खण्डित करने के लिए देश के सामाजिकों का एक वर्ग संगठित होकर उठ खड़ा हुआ है और 'सर्वधर्म समभाव' के परम्परागत रूप को पुनः जागृत् करने और आक्रमण द्वारा स्थापित अधिकार के निराकरण एवं प्रत्याख्यान के लिए उठ खड़ा हुआ है तो हमें उसका स्वागत और समर्थन करना चाहिए, विरोध नहीं। हमें इस मूल तथ्य पर बल देने की आवश्यकता है, आक्रमण आक्रमण है, चाहे वह सैनिक शक्ति के बल पर यहाँ के देव स्थानों पर अधिकार कर उन्हें नष्ट करना हो, अथवा सैनिक बल और धन-बल से धर्मपरिवर्तन हो, विचार परिवर्तन हो, सभी आक्रमण की परिभाषा में आते हैं। उसे समाप्त करना वैसा ही है जैसे सम्पत्ति पर बलात् किये गए अधिकारी को समाप्त करना। इससे समझौता नहीं हो सकता, समझौते का अर्थ दासता को स्वीकार करना है। इस आक्रमण को समाप्त करने के लिए यदि जनसाधारण अपने को नए सिरे से संगठित करता है, और संगठित रूप में इस प्रकार के नए-पुराने आक्रमण को निरस्त करने की माँग करता है, यह साम्प्रदायिकता नहीं अपितु देश की अस्मिता को जागृत् करना है।

(प्रकर से साभार)

(पृष्ठ २० का शेष)

में जो समय बर्बाद होता है, उसकी कीमत अव्यवस्थित दफ्तर में बर्बाद होने वाले समय से किसी कदर भी कम नहीं है। बर्तनों और कढ़ाइयों को कप बोर्ड में हौदी के पास रखकर काफी समय बचाया जा सकता है। सभी साग-भाजी, घी, दूध, मक्खन और फलों को रेफ्रीजरेटर में रखते समय एक निश्चित ग्रुप में रखिए। नाश्ते में काम आने वाली चीजों, जैसे फलों का रस, अण्डा आदि को साथ-साथ रखिए। उन्हें अलग-अलग खानों में रखने से समय की बर्बादी होगी। जरा आप चम्मचों को प्यालों के पास रखकर देखिए, कितना समय बचेगा।

समय-सारिणी बनाइए

एक बार आप दिन के १४४० मिनटों का अच्छा इस्तेमाल करना सीख लीजिए, फिर आपकी सफलता पर लोग अचरज करेंगे। आमोद-प्रमोद के लिए आपके पास मजे का समय बचा रहेगा। ऐसा करते-करते हो सकता है, आपके हाथ समय बचाने की नई-नई तरकीबें भी लग जाएँ, जिन्हें आप अपने मित्रों को बताकर उनका भी उपकार कर सकें।

जार्ज सेवाइल ने ठीक ही कहा है, "समय का दुर्व्यय आत्महत्या के समान है।" और वर्ड्स वर्थ की ये पंक्तियाँ भी जरा पढ़ लीजिए—

"काश कि गतिशील समय दृश्य की तरह स्थिर होता, जिस पर वे देख लेते कि वे पिछड़ गए हैं।"

(अनूदित)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'खोजा' मुसलमान क्यों बने ?

—वचनेश त्रिपाठी 'साहित्येन्दु'

काठियावाड़ (गुजरात) के खोजा जातीय लोग शुरू से हिन्दू ही चले आ रहे थे। बीच में एक घटना घट गई। हुआ यह कि वहाँ एक मुसलमान फकीर था—खोजा लोग उसे अपना गुरु मानने लगे। इसका नतीजा यह हुआ कि बाकी हिन्दू समाज के लोग, खासकर पंडित-पुरोहित वर्ग, उन लोगों को मुसलमान मानकर उनसे दूरी और बेगानापन बरतने लगे जबकि खोजा लोग अपने नाम हिन्दू ही रखते थे। उनमें रामजोहार हिन्दू-पद्धति प्रचलित थी इसके बावजूद कि उनका गुरु मुस्लिम फकीर था। उन्हें मुसलमान मानना सरासर अन्याय था, परन्तु पंडितों ने उन्हें हिन्दू समाज से बहिष्कृत-तिरस्कृत कर रखा था। जिनका तन-मन-प्राण हिन्दुत्व में ही बसता था, उनको हिन्दू मानने से इन्कार कर दिया। यही नहीं परि सीमा इस अन्याय की उस दिन दृश्यमान हुई जब खोजा लोगों के मुखिया ने आपस में मिलकर यह तय किया कि हम लोग जाएँ और पंडितों से, मान्य हिन्दू धर्म धुरंधरों से आग्रह करें कि आप लोग कृपया हमें अर्थात् सम्पूर्ण खोजा जाति को हिन्दू की मान्यता प्रदान करें। और यह व्यवस्था दें कि आइन्दा कभी किसी खोजे को मुसलमान कहकर बहिष्कृत-तिरस्कृत नहीं किया जाएगा। यह भावना लेकर खोजाओं के मुखिया लोग पंडितों के पास पहुँचे और अपना मन्तव्य उनके सम्मुख प्रकट किया, परन्तु दुर्भाग्य कि पंडितों को होश न आया तथा उन्होंने अभिजात्यता किवां (रूढ़िवादी पाखण्ड) से प्रेरित हो उनसे कह दिया—"कुछ भी हो, हम आप लोगों को हिन्दू नहीं मान सकते हैं।" यह बात १९वीं शताब्दी की है।

यह कथन विषवृक्ष बन गया, उसी दिन भारत में मानो बिलगाव-विघटन-विभाजन यानी कि पाकिस्तान की नींव खुद गई। खोजा मुखियाओं ने इससे स्वयं को अतीव अपमानित माना और फिर इसकी जो प्रतिक्रिया स्वाभाविक रूप से होनी थी—वह होकर रही। उन खोजा मुखियाओं ने वापस आकर खुलेआम अत्यन्त आक्रोश-आवेशपूर्वक यह ऐलान किया कि आज से हम मुकम्मिल मुसलमान ही हैं। खबरदार—आगे से कोई भी खोजा अपने मकान का दरवाजा रामनाम से अंकित न करे—न अपने बच्चों के हिन्दू नाम रखे। जो भी नाम खोजा लोगों के हिन्दू चले आ रहे हैं, उन्हें मुस्लिम नामों में तत्काल बदल दिया जाए। कारण हम समझते थे और हमने पंडितों से मनुहार मिन्नत की कि 'श्रीमान हम खोजा जाति के लोग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपकी हिन्दू जाति के ही अंग हैं। हमें अपना लें। अपने से हरगिज दूर न करें। लेकिन पंडित लोग किसी तरह न माने—तो ठीक है। हम मुकम्मिल मुसलमान होकर दिखा देंगे कि आखिर हम भी इन्सान ही हैं और हमें भी ईश्वर ने ही बनाया है और जो भी दुश्मनी हम हिन्दुओं से बरत सकते हैं—बरतने में कोई कसर न रखेंगे।"

कहते हैं—काठियावाड़ी पंडितों ने आगे इसी सवाल को काशी के पंडितों तक पहुँचाकर उनकी राय भी माँगी कि खोजा लोग जो मुस्लिम फकीर को गुरु मानते हैं—हम उन्हें हिन्दू स्वीकार करें या नहीं ? तो अफसोस ! काशी के पंडितों ने भी खिलाफ ही राय दी कि 'उन्हें कभी भी हिन्दू नहीं माना जा सकता।' फिर तो खोजा लोगों में हिन्दू-विरोध की एक फिजा ही बन गई—तब मुहम्मद अली जिन्ना का जन्म नहीं हुआ था खोजा परिवार के बीच। परन्तु उक्त ऐलान के अनुसार खोजा जातीय हिन्दू अपने सब नाम, एक-एक बच्चे तक के, मुसलमानी रख चुके थे।

हिन्दू नाम-निशान तक खोजा-परिवारों से मिटाकर नष्ट कर दिए गए। जिनके सब आचार-विचार जन्म से लेकर मृत्युकाल तक हिन्दू ही चलते आते थे, वे आमूल-चूल पक्के मुसलमान मानने लगे अपने को। यदि देश में 'प्रतिक्रियावाद' की कोई सप्रमाण परिभाषा हो सकती है तो वह यही है और यह एक सही परिभाषा या व्याख्या है।

इसी खोजा जाति के एक परिवार में मुहम्मद अली जिन्ना का जन्म हुआ। परिस्थितिवश प्रतिक्रियावादी संस्कारों के कारण जन्मकाल से ही भारत के विभाजन की भूमिका अपने दिल-दिमाग में संजोए हुए पुच्छल तारे की तरह भारत के राजनीतिक आकाश को अपशकुनों से विकृत कर बैठे। जिन्ना मियाँ के पुरखों की सब पीढ़ियाँ अति पुरातन काल से हिन्दू ही रहती आ रही थीं। और यद्यपि जिन्ना ने कभी लोकमान्य तिलक के मुकदमे की पैरवी तहे दिल से की थी जोकि उस जमाने में बड़े साहस की बात थी। यही नहीं, जिन्ना ने कभी कांग्रेस का समर्थन करके भारत की आजादी को भी जरूरी माना था। परन्तु एक दिन वे गांधी से मुलाकात करने गए तो गांधीजी की बीमारी की हालत में उन्हें बाहर आधे घंटे इन्तजार करना पड़ा और फिर जब मिलने बुलाया गया तो जमीन पर बिछी दरी पर बैठना पड़ा। उसी समय से जिन्ना दूसरे जिन्ना, अंग्रेजों के बगल बच्चे और उनके पक्षधर बनकर लौटे। कह डाला कि अब मि० गांधी को खुद मुझसे मिलने आना होगा, हम कभी दोबारा मिलने नहीं आएँगे !" अंग्रेज तो तैयार ही बैठे थे—उन्होंने जिन्ना की पीठ ठोंकी। हाथों-हाथ लिया और फिर जिन्ना पाकिस्तान के नक्शे में हिन्दू-विरोधी नफरत का मनहूस रंग भरने लगे—बनाकर रहे पाकिस्तान।

(पांचजन्य से साभार)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्कृत मे शपथ ग्रहण करने वाले सांसद

[नवम लोकसभा के गठन के अवसर पर केवल २६ नए सांसदों ने संस्कृत में शपथ ग्रहण की थी, दसवीं लोकसभा के गठन पर यह संख्या ५४ हो गई है। संस्कृत के प्रति सांसदों की निष्ठा बनी रहने पर ही संस्कृति की रक्षा सम्भव है।—**सम्पादक**]

१. श्री बलराम जाखड़ कां०, २. श्री बन्दारु दत्ताचार्य भाजपा, ३. श्री द्वारका नाथ दास, भाजपा, ४. कवीन्द्र पुरकायस्थ, भाजपा, ५. श्रीमती गिरिजा देवी, जद, ६. श्रीमती रीता वर्मा, भाजपा, ७. श्री रामदेव राम, भाजपा, ८. वैकुण्ठलाल शर्मा 'प्रेम', भाजपा, ९. श्रीमती भावना चिरवालिया, भाजपा, १०. श्री दिलीप भाई सांघानी, भाजपा, ११. श्री रतिलाल वर्मा, भाजपा, १२. श्री हरीन पाठक, भाजपा, १३. श्री ह० प० चावडा, भाजपा, १४. शंकरजी लक्ष्मणजी वाघेला, भाजपा, १५. डॉ० के० डी० जसवानी, भाजपा, १६. श्री प्रेमकुमार धूमल, भाजपा, १७. योगानन्द सरस्वती, भाजपा, १८. श्रीमती विजयराजे सिंधिया, भाजपा, १९. कु० उमा भारती, भाजपा, २०. श्री रामेश्वर पाटीदार, भाजपा, २१. श्री रामकृष्ण कुस्मारिया, भाजपा, २२. श्रीमती सुमित्रा महाजन, भाजपा, २३. श्री सत्यनारायण जतिया, भाजपा, २४. डॉ० लक्ष्मीनारायण पाण्डे भाजपा, २५. श्री राम नायक, भाजपा, २६. श्री रा०ग० कापसे, भाजपा, २७. डॉ० गुणवन्त सरोदा, भाजपा, २८. श्री मोरेश्वर सावे, शिवसेना, २९. शंकरराव काले, कां०, ३०. श्री अन्ना जोशी, भाजपा, ३१. श्री गोपीनाथ नारायण, कां०, ३२. श्री रामसिंह रावत, भाजपा, ३३. श्री दाउदयाल जोशी, भाजपा, ३४. श्री गुमानमल लोढ़ा, भाजपा, ३५. मेजर जनरल भुवनचन्द्र, भाजपा, ३६. श्री चिन्मयानन्द, भाजपा, ३७. श्री राजवीरसिंह, भाजपा, ३८. श्री सन्तोष कुमार गंगवार, भाजपा, ३९. श्री जनार्दन मिश्र, भाजपा, ४०. श्री विश्वनाथदास शास्त्री, भाजपा, ४१. श्री अष्टभुजप्रसाद शुक्ल, भाजपा, ४२. श्री महन्त अवैद्यनाथ, भाजपा, ४३. श्री वीरेन्द्र, भाजपा, ४४. श्री श्रीशचन्द्र दीक्षित, भाजपा, ४५. श्री विनय कटियार, भाजपा, ४६. श्री भगवानशंकर रावत, भाजपा, ४७. श्री पं० विश्वनाथ शर्मा, भाजपा, ४८. श्री श्यामविहारी मिश्र, भाजपा, ४९. कैप्टन पं० जगतवीर सिंह द्रोण, भाजपा, ५०. स्वामी सुरेशानन्द, भाजपा, ५१. श्री स्वामी साक्षीजी, भाजपा, ५२. डॉ० लालबहादुर रावल, भाजपा, ५३. श्री रमेशचन्द्र तोमर, भाजपा, ५४. श्री नरेशकुमार बालियां, भाजपा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या कोई ऐसा प्राणी जीवित है, जिसने अपने आप से न कहा हो,
यह मेरी, मेरी अपनी मातृभूमि है ?

जो हाँ, कांग्रेस के चालीस वर्ष के शासन ने एक-दो नहीं, सहस्रों-लाखों ऐसे प्राणी पैदा कर दिये हैं जो अपनी मातृभूमि को बेचने को तैयार हैं, देश के साथ गद्दारी करने के लिए तैयार हैं।

यह 'करिश्मा' है कांग्रेस का

वास्तव में कांग्रेस के बीज में ही कुछ था जिसने यह विष फैलाया है। पिछले एक सौ वर्ष की राजनीति के पतन की कहानी को समझने के लिए पढ़िए—

श्री गुरुदत्त की ये रचनाएँ

१. स्वाधीनता के पथ पर	५०.००
२. पथिक	५०.००
३. स्वराज्य दान	६०.००
४. दासता के नये रूप	६०.००
५. विश्वासघात	५०.००
६. देश की हत्या (उपन्यास)	२०.००
७. दो लहरों की टक्कर (८ भाग)	८०.००
८. भारत : गांधी-नेहरू की छाया में	४० ००
९. मैं हिन्दू हूँ (हिन्दू धर्म की मान्यताएँ)	१२.००
१०. न्यायाधिकरण (उपन्यास)	२०.००
११. जमाना बदल गया (९ भाग)	५४.००
१२. स्व अस्तित्व की रक्षा भाग-१	१८.००
१३. स्व अस्तित्व की रक्षा भाग-२	१४.००
१४. वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान हिन्दू राष्ट्र	१०.००

भारती साहित्य सदन
३०/९०, कनाट सरकस (मद्रास होटल के नीचे)
नई दिल्ली-११०००१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नवीन प्रकाशन

			पेपर बैक संस्करण
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास			
(आदिकाल से रामोदय काल तक)		श्री गुरुदत्त	40.00
प्रभात वेला	(उपन्यास)	,,	40.00
कुमार सम्भव	(उपन्यास)	,,	40.00
उमड़ती घटाएँ	(उपन्यास)	,,	60.00
स्वाधीनता के पथ पर	(उपन्यास)	,,	50.00
भैरवी-चक्र	(उपन्यास)	,,	30.00
मोपला	(उपन्यास)	वीर सावरकर	14.00
धरती है बलिदान की	(क्रान्तिकारियों की कहानियों)	शान्ताकुमार	14.00
आगरे का लालकिला			
हिन्दू भवन है	(ऐतिहासिक विवेचन)	पी० एन० ओक	30.00
स्वाधीनता के पथ पर	(उपन्यास)	श्री गुरुदत्त	50.00
स्वराज्यदान	(उपन्यास)	,,	60.00
दासता के नये रूप	(उपन्यास)	,,	60.00
विश्वासघात	(उपन्यास)	,,	50.00
वेद और वैदिक काल	(विवेचना)	,,	20.00
श्रीमद्भगवद्गीता	(भाष्य)	,,	50.00
जात न पूछे कोय	(उपन्यास)	,,	12.00
वनवासी	(उपन्यास)	,,	14.00
दो भद्र पुरुष	(उपन्यास)	,,	14.00
प्रगतिशील	(उपन्यास)	,,	14.00
विश्वास	(उपन्यास)	,,	14.00
भूल	(उपन्यास)	,,	14.00
एक और अनेक	(उपन्यास)	,,	50.00
मानव	(उपन्यास)	,,	50.00
सहस्रबाहु	(वैज्ञानिक उपन्यास)	,,	40.00
गगन के पार	(वैज्ञानिक उपन्यास)	,,	30.00
परित्राणाय साधूनाम् (महाभारत के आधार पर रचे गये तीन उपन्यास—**अवतरण, सम्भवामि युगे युगे** तथा **विनाशाय च दुष्कृताम्** का संयुक्त एक ही जिल्द में पेपर बैक संस्करण) पृ० 24 + 844 बड़े आकार में		,,	160.00

सितम्बर १९९१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शाश्वत वाणी सितम्बर १९९१ दिल्ली पोस्टल रजिस्टर्ड नं० (D)C 245/87

श्री पुरुषोत्तम नागेश ओक की खोजपूर्ण रचनाएँ

	मूल्य
फल ज्योतिष (ज्योतिष के विचार पक्ष तथा ज्योतिष विद्या पर अनूठी पुस्तक)	३०.००
आगरे का लालकिला हिन्दू भवन है	३०.००
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास-१	४०.००
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास-२	४०.००
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास-३	४०.००
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास-४	४०.००
दिल्ली का लाल किला लाल कोट था	२५.००
भारत में मुस्लिम सुल्तान-१	४०.००
भारत में मुस्लिम सुल्तान-२	२५.००
ताजमहल मन्दिर भवन है	३० ००
भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें	३६.००
कौन कहता है अकबर महान् था ?	४०.००
विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय	२५.००
लखनऊ के इमामबाड़े हिन्दू भवन हैं	१८.००
फतेहपुर सीकरी हिन्दू नगर है	२५.००
ताजमहल तेजोमहालय शिव मन्दिर है	६.००
Agra Red Fort is a Hindu Building	10.00
Christianity is Chrishna Niti	25.00
Some Blunders of Indian Historical Research	75.00

श्री बलराज मधोक की रचनाएँ

खण्डित हिन्दुस्थान में मुस्लिम समस्या का पुनरोदय	१६.००
हिन्दू राज्य	२०.००
जीत या हार (उपन्यास)	२०.००
भारत और संसार	१६.००
भारत की सुरक्षा	८.००
भारत में लोकतन्त्र	१६.००

प्रकाशक : अशोक कौशिक द्वारा संपादित एवं अजय प्रिण्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ में मुद्रित तथा ३७/९० कमर्शियल सर्कल, नई दिल्ली से वितरित।

CC-0. Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi.